खेलो भारत नीति 2025
समग्र विकास की दिशा में कदम

राष्ट्रीय खेल नीति 2025 जिसे 'खेलो भारत नीति 2025' नाम दिया गया है, भारत के खेल परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। नयी खेल नीति को 1 जुलाई, 2025 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी। यह नीति राष्ट्रीय खेल नीति 2001 को प्रतिस्थापित करने के लिए लायी गयी है। खेलो भारत नीति 2025 भारत को वैश्विक खेल महाशक्ति बनाने तथा 2036 ओलंपिक एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए एक रणनीतिक रोडमैप प्रदान करती है। नई खेल नीति सामाजिक समावेशन, आर्थिक विकास, व्यापक भागीदारी और शिक्षा के साथ खेल एकीकरण जैसे पाँच मुख्य स्तंभों पर आधारित है जो इसे एक समग्र और दूरदर्शी खेल नीति के रूप में स्थापित करने में मददगार साबित होंगे। इसका लक्ष्य शासन, बुनियादी ढाँचा, प्रौद्योगिकी और निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी को सुदृढ़ बनाकर, एक स्वस्थ, समावेशी और वैश्विक-स्तर पर प्रतिस्पर्धी खेल राष्ट्र का निर्माण करना है।

भारत में खेल अब केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गए हैं, बल्कि वे राष्ट्रीय विकास, सामाजिक समावेशन और वैश्विक प्रभाव के सशक्त प्रेरक बनकर उभरे हैं। जैसे-जैसे भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने के अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है, खेल एक स्वस्थ, कुशल और आत्मविश्वासी जनसंख्या के निर्माण के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में स्थापित हो रहे हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 1 जुलाई, 2025 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रीय खेल नीति (NSP) 2025 को स्वीकृति प्रदान किया जाना भारत की खेल यात्रा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। नई खेलो भारत नीति राष्ट्रीय खेल नीति, 2001 का स्थान लेगी। यह नीति भारत को एक वैश्विक खेल महाशक्ति बनाने तथा 2036 ओलम्पिक खेलों सहित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने हेतु एक व्यापक एवं भविष्यदृष्टि से परिपूर्ण रोडमैप प्रस्तुत करती है।

कुरुक्षेत्र संपादकीय डेस्क

विगत वर्षों में भारत में खेलों के प्रति दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। अब खेलों को केवल मनोरंजन की गतिविधि नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण, सामाजिक सशक्तीकरण और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा के प्रभावी माध्यम के रूप में देखा जा रहा है। राष्ट्रीय खेल नीति 2025 इसी परिवर्तनशील सोच का सशक्त प्रतिबिंब है और भारत को एक सशक्त, स्वस्थ और गौरवशाली 'खेल राष्ट्र' के रूप में स्थापित करने की दिशा में निर्णायक कदम है।

राष्ट्रीय खेल नीति 2025 केंद्रीय मंत्रालयों, नीति आयोग, राज्य सरकारों, राष्ट्रीय खेल महासंघों, खिलाड़ियों, विशेषज्ञों और आम नागरिकों से व्यापक बातचीत और सुझावों के बाद तैयार की गई है। यह नीति खेलों को केवल प्रतिस्पर्धा तक सीमित न मान कर उन्हें आर्थिक विकास, सामाजिक सशक्तीकरण, शिक्षा सुधार और राष्ट्रीय फिटनेस का मजबूत माध्यम मानती है।

यह नीति पाँच प्रमुख स्तंभों पर आधारित है–वैश्विक-स्तर पर उत्कृष्टता, आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन, जनभागीदारी और शिक्षा से जुड़ाव। इसके माध्यम से एक ऐसा सशक्त खेल तंत्र विकसित करने की कल्पना की गई है, जिसमें ज़मीनी-स्तर से प्रतिभाओं को आगे बढ़ाया जाए, आधुनिक खेल ढाँचा तैयार हो, बेहतर प्रबंधन व्यवस्था बने और खिलाड़ियों व खेल से जुड़े पेशेवरों के लिए स्थायी कॅरियर के अवसर उपलब्ध हो।

राष्ट्रीय खेल नीति 2025 खेलों को भारत के विकास की मुख्यधारा से जोड़ते हुए एक स्वस्थ, मजबूत और आत्मविश्वासी भारत के निर्माण के लिए खेलों की परिवर्तनकारी शक्ति को अपनाने का संकल्प व्यक्त करती है।

वैश्विक मंच पर उत्कृष्टता

नई खेल नीति का पहला स्तंभ बच्चों और युवाओं की प्रतिभा को शुरुआती-स्तर पर पहचान कर उसे निखारने और उन्हें उच्च-स्तर तक पहुँचाने पर केंद्रित है।

- देशभर में प्रतियोगी लीग और टूर्नामेंट को बढ़ावा देना तथा गाँवों और शहरों में खेल सुविधाओं का विकास करना।
- प्रशिक्षण, कोचिंग और खिलाड़ियों की समग्र देखभाल के लिए आधुनिक व्यवस्था तैयार करना।
- राष्ट्रीय खेल महासंघों की कार्यक्षमता और प्रबंधन को मज़बूत बनाना।
- खेल विज्ञान, खेल चिकित्सा और तकनीक के उपयोग से खिलाड़ियों के प्रदर्शन को बेहतर बनाना।
- कोच, तकनीकी अधिकारी और सहायक स्टाफ सहित खेल-कर्मियों को प्रशिक्षित करना।

आर्थिक विकास के लिए खेल

नई खेल नीति खेलों की आर्थिक संभावनाओं को पहचानती है। इसका उद्देश्य है–

- खेल पर्यटन को बढ़ावा देना और बड़े अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों को भारत में आकर्षित करना।
- खेल उपकरण निर्माण और उससे जुड़े उद्योग को मज़बूत बनाना तथा इस क्षेत्र में स्टार्टअप और उद्यमिता को प्रोत्साहित करना।
- पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP), कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) और नए तरह के वित्तपोषण मॉडल के माध्यम से निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाना।

सामाजिक विकास के लिए खेल

यह नीति समाज में समावेशन और समान अवसर को बढ़ावा देने में खेलों की भूमिका पर जोर देती है। इसके तहत–

- महिलाओं, आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों, आदिवासी समुदायों और दिव्यांगजनों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाएँगे।
- देश के पारम्परिक और स्वदेशी खेलों को फिर से लोकप्रिय बनाया जाएगा और उन्हें नई पहचान दी जाएगी।
- खेलों को एक सम्मानजनक कॅरियर विकल्प के रूप में स्थापित किया जाएगा, जिसके लिए उन्हें शिक्षा से जोड़ा जाएगा, स्वयंसेवा को बढ़ावा दिया जाएगा और दोहरी कॅरियर व्यवस्था को समर्थन दिया जाएगा।
- विदेशों में बसे भारतीय समुदाय को भी खेलों के माध्यम से जोड़ा जाएगा।

खेल को जन-आंदोलन बनाना

खेलों को राष्ट्रीय जन-आंदोलन का रूप देने के लिए बड़े स्तर पर प्रयास किए जाएंगे।

- देशभर में अभियान और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम

से अधिक से अधिक लोगों को खेलों से जोड़ना और फिटनेस की संस्कृति को बढ़ावा देना।

- स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों के लिए फिटनेस सूचकांक शुरू करना।
- सभी के लिए खेल सुविधाओं तक आसान और समान पहुँच सुनिश्चित करना।

शिक्षा के साथ खेलों का जुड़ाव (एनईपी 2020)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, खेलो भारत नीति 2025 का उद्देश्य है–

- स्कूलों के पाठ्यक्रम में खेलों को अनिवार्य और प्रभावी रूप से शामिल करना।
- शिक्षकों और शारीरिक शिक्षा अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण देकर खेल शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देना।

रणनीतिक ढाँचा

अपने लक्ष्यों को साकार करने के लिए राष्ट्रीय खेल नीति 2025 एक मज़बूत और व्यापक कार्ययोजना प्रस्तुत करती है।

- खेल प्रशासन और प्रबंधन के लिए प्रभावी नियम-कानून और व्यवस्थाएँ तैयार की जाएंगी।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ाने के लिए नए वित्तीय मॉडल विकसित किए जाएंगे और PPP व CSR के माध्यम से सहयोग को प्रोत्साहन मिलेगा।
- प्रदर्शन मूल्यांकन, शोध और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए एआई, डेटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाएगा।
- स्पष्ट मानकों, लक्ष्य निर्धारण और समयबद्ध परिणामों के साथ एक राष्ट्रीय निगरानी ढाँचा तैयार किया जाएगा।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए यह नीति एक मॉडल के रूप में कार्य करेगी ताकि वे अपने स्तर पर भी इसी दिशा में नीतियाँ बना सकें।
- सभी मंत्रालयों और विभागों की योजनाओं में खेलों को शामिल कर एक समग्र प्रभाव सुनिश्चित किया जाएगा।

अपने सुव्यवस्थित दृष्टिकोण और दूरदर्शी रणनीति के साथ, राष्ट्रीय खेल नीति 2025 भारत को वैश्विक-स्तर पर एक अग्रणी खेल राष्ट्र बनाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी मार्ग पर ले जाती है। साथ ही, एक स्वस्थ, सक्रिय और सशक्त नागरिक समाज के निर्माण का आधार भी तैयार करती है।

स्रोतः युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय

निष्कर्ष

खेलो भारत नीति 2025 जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, भारत में खेलों के प्रति सोच में एक बुनियादी बदलाव का प्रतीक है। इस नीति में खेलों को केवल कुछ चुनिंदा खिलाड़ियों की उपलब्धियों तक सीमित न रखकर एक मज़बूत खेल पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ने का विज़न है, जहाँ उत्कृष्टता, सहभागिता और राष्ट्र निर्माण एक साथ चलते हैं।

शिक्षा, आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और तकनीकी नवाचार के साथ खेलों को जोड़ते हुए यह नीति खेलों को देश के समग्र विकास का सशक्त माध्यम बनाती है। ज़मीनी-स्तर पर प्रतिभाओं की पहचान, विश्व-स्तरीय खेल ढाँचा, वैज्ञानिक प्रशिक्षण व्यवस्था, बेहतर प्रबंधन और निजी क्षेत्र की भागीदारी पर दिया गया ज़ोर भारत में खेलों के उज्ज्वल भविष्य की मज़बूत नींव रखता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राष्ट्रीय खेल नीति 2025 खेलों को एक जन-आंदोलन के रूप में देखती है–ऐसा आंदोलन जो समाज के हर वर्ग में फिटनेस, अनुशासन, टीमवर्क और राष्ट्रीय गौरव की भावना को मज़बूत करे। इसका लक्ष्य एक ऐसा भारत बनाना है जहाँ हर बच्चे को खेलने का अवसर मिले, हर खिलाड़ी को आगे बढ़ने का मंच मिले और हर नागरिक फिट और सक्रिय जीवनशैली को अपनाए। ❑

संकेतों को पहचानते हैं जैसे किसी गेंदबाज़ की पकड़ में हल्का बदलाव या दबाव में दिशा की प्राथमिकता।

इस विश्लेषण को डिजिटल ट्विन टेक्नोलॉजी और भी सशक्त बनाती है, जहाँ नीरज चोपड़ा जैसे शीर्ष खिलाड़ियों के वर्चुअल शारीरिक मॉडल तैयार किए जाते हैं। इन मॉडलों के माध्यम से विशेष दबाव स्थितियों में शरीर की संभावित प्रतिक्रिया का आकलन किया जाता है। इससे टीमों को वास्तविक मैदान पर उतरने से पहले ही प्रशिक्षण भार और पर्यावरणीय परिस्थितियों को आभासी रूप से परखने का अवसर मिलता है, जिससे खिलाड़ी सर्वोत्तम और सुरक्षित प्रदर्शन के लिए पूरी तरह तैयार हो पाते हैं।

तुलनात्मक विश्लेषणः भारत बनाम विकसित देश

हालाँकि भारत अभूतपूर्व गति से अंतर कम कर रहा है, लेकिन तकनीक अपनाने का उसका दृष्टिकोण अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसी स्थापित खेल महाशक्तियों से अलग है। विकसित देशों के पास विकेंद्रीकृत और उच्चस्तरीय बुनियादी ढाँचा है, जो विश्वविद्यालय प्रणालियों से जुड़ा हुआ है और दशकों के दीर्घकालिक डेटा पर आधारित है। वहाँ खेल विकास का फ़ोकस 'मामूली बढ़त' (marginal gains) जैसे क्षेत्रों पर रहता है, जिनमें *एयरोडायनामिक मैटेरियल साइंस* जैसी सूक्ष्म लेकिन निर्णायक प्रगति शामिल है।

इसके विपरीत, वर्ष 2026 में भारत का मॉडल अधिक केंद्रीकृत है, जिसमें उच्च प्रदर्शन केंद्रों की अहम भूमिका है और विस्तार व पहुँच पर विशेष ज़ोर दिया गया है। एआई-आधारित प्रतिभा पहचान और किफ़ायती स्मार्टफ़ोन-आधारित कोचिंग के माध्यम से भारत उन्नत तकनीक को व्यापक-स्तर पर उपलब्ध कराने को प्राथमिकता दे रहा है, ताकि विशाल और अब तक अप्रयुक्त प्रतिभा आधार तक पहुँचा जा सके।

प्रिसिज़न-आधारित खेलों में प्रदर्शन अंतर को पाटने के लिए भारत रणनीतिक रूप से पश्चिमी देशों की स्पोर्ट्स इंजीनियरिंग विशेषज्ञता को भी अपना रहा है। साइक्लिंग में विंड-टनल परीक्षण के लिए ब्रिटेन की सफलता से प्रेरणा लेते हुए भारत ने शूटिंग और तीरंदाज़ी जैसे ओलम्पिक खेलों में उन्नत उपकरण कैलिब्रेशन को शामिल करना शुरू कर दिया है। जहाँ विकसित देश तकनीक का उपयोग मौजूदा उत्कृष्टता को और निखारने के लिए करते हैं, वहीं भारत इन उपकरणों के माध्यम से उच्च-स्तरीय प्रशिक्षण को संस्थागत रूप दे रहा है। इससे उपकरणों की सटीकता, जो अक्सर पोडियम स्थान और चौथे स्थान के बीच का अंतर तय करती है, अब भारतीय खिलाड़ियों के लिए बाधा नहीं रह गई है।

भारतीय खेल तकनीक पारिस्थितिकी तंत्र में भी तेज़ उछाल देखा गया है। वर्ष 2026 तक 250 से अधिक सक्रिय स्टार्टअप डेटा-केंद्रित प्रशिक्षण की दिशा में बदलाव को आगे बढ़ा रहे हैं। इनमें Stupa Sports Analytics जैसे नवोन्मेषक अग्रणी हैं, जो टेबल टेनिस तक सीमित रहने के बाद अब शौकिया और पेशेवर दोनों स्तरों के लिए बहु-खेल एआई प्रदर्शन ट्रैकिंग प्रदान कर रहे हैं। साथ ही Game Theory जैसी कंपनियाँ बेंगलुरु जैसे शहरों में 'स्मार्ट कोर्ट' स्थापित कर पेशेवर-स्तर के आँकड़ों को आम खिलाड़ियों तक पहुँचा रही हैं, जहाँ कंप्यूटर विज़न के ज़रिए सप्ताहांत

में खेलने वाले खिलाड़ी भी अपने खेल का विश्लेषण कर सकते हैं।

इस विकास को *'फैन इकोनॉमी'* से भी बल मिल रहा है। फ़ैंटेसी स्पोर्ट्स और एआर/वीआर आधारित देखने के अनुभवों से उत्पन्न पूँजी अनुसंधान एवं विकास के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध करा रही है, जिससे प्रशिक्षण क्षेत्र में नई तकनीकी सफलताओं का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

चुनौतियाँ

फिर भी, इस तकनीक का सार्वभौमिक प्रभाव स्थापित होने से पहले कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं। सबसे बड़ी चुनौती लागत और पहुँच से जुड़ी है। उच्चस्तरीय थ्री-डी मोशन कैप्चर लैब और उन्नत सेंसर अभी भी मुख्य रूप से महानगरों तक सीमित हैं। विकास के अगले चरण में टियर-2 और टियर-3 शहरों के लिए कम लागत, अधिक प्रभाव वाले समाधानों को प्राथमिकता देना अनिवार्य होगा।

इसके साथ ही पारम्परिक कोचों के बीच डेटा साक्षरता की तत्काल आवश्यकता है। कई कोच एल्गोरिदम-आधारित विश्लेषण को अपनाने में संकोच करते हैं, जिससे 'ट्रेन द ट्रेनर' जैसी रणनीति की ज़रूरत पड़ती है। इसके अलावा, जैसे-जैसे संवेदनशील बायोमेट्रिक और आनुवांशिक डेटा का संग्रह बढ़ रहा है, डेटा गोपनीयता के लिए ठोस और नैतिक ढाँचे तैयार करना उद्योग की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारियों में से एक बन गया है।

निष्कर्ष

भारत की 2036 ओलम्पिक खेलों की मेज़बानी की दावेदारी को देखते हुए अब ध्यान केवल स्टेडियम बनाने तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि उत्कृष्टता के एक समग्र पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण पर केंद्रित हो गया है। वर्ष 2026 तक तकनीक भारतीय खिलाड़ी के लिए किसी विलासिता की वस्तु नहीं, बल्कि बुनियादी ढाँचे का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुकी है।

यह विशिष्ट 'भारतीय मार्ग', जिसमें आईटी क्षमता और अटूट खेल महत्वाकांक्षा का संगम है, विकास के लिए एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत कर रहा है जो विस्तार योग्य और डिजिटल रूप से सुलभ है। अंतिम लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि वर्ष 2036 तक किसी भारतीय खिलाड़ी की पोडियम पर पहुँच महज संयोग न हो बल्कि वैज्ञानिक निश्चितता और एक सुव्यवस्थित, अनुकूलित तैयारी प्रणाली का परिणाम हो। ❑

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

मासिक पत्रिकाओं के लिए विज्ञापन मूल्य सूची

क्र॰ सं॰	पत्रिकाओं का नाम	प्रिंट क्षेत्र (वर्ग सेमी. में) चौ॰ x ऊँ॰	आंतरिक पृष्ठ				पार्श्व आवरण	दूसरा आवरण	तीसरा आवरण
			पूरा पृष्ठ (रंगीन)	आधा पृष्ठ (रंगीन)	पूरा पृष्ठ (श्वेत श्याम)	आधा पृष्ठ (श्वेत श्याम)	पूरा पृष्ठ (रंगीन)	पूरा पृष्ठ (रंगीन)	पूरा पृष्ठ (रंगीन)
			पत्रिकाओं के एक अंक में उल्लिखित स्थान के लिए मूल्य रुपये में						
1.	योजना (अंग्रेजी)	17 x 23	35000	20000	25000	15000	100000	70000	70000
2.	योजना (हिंदी)	17 x 23	25000	15000	18000	11000	75000	50000	50000
3.	कुरुक्षेत्र (अंग्रेजी/हिंदी)	17 x 23	20000	12000	15000	10000	30000	27000	25000
4.	योजना (गुजराती/मलयालम/पंजाबी/असमिया/उर्दू/ओडिया)	18 x 23	7000	4500	5000	3000	10000	9000	8000
5.	योजना (तेलुगु/तमिल/कन्नड़/बंगाली/मराठी)	18 x 23	13000	8000	10000	6000	20000	17000	15000
6.	आजकल (हिंदी/उर्दू)	11.5 x 19	10000	6000	7000	5000	15000	12000	11000
7.	बाल भारती (हिंदी)	15.5 x 20.5	10000	---	---	---	15000	12000	11000

विज्ञापनों की बुकिंग के लिए या विज्ञापनों के मूल्य, कमीशन और छूट से संबंधित किसी अन्य जानकारी/स्पष्टीकरण के लिए कृपया प्रसार एकक, प्रकाशन विभाग से ईमेल sec-circulation-moib@gov.in या फोन 011-24365610/24367453 द्वारा सीधे संपर्क करें।